पूर्व परिषदीय परीक्षा 2016-17 **(प्रथम)**

कक्षा : बारहवीं

विषय : हिन्दी (केन्द्रिक)

आदर्श उत्तर-माला

पूर्णांक :100 समय: 3 घण्टे

विद्यार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश-

उत्तर-माला में बताए गए उत्तर अथवा समाधान केवल उदाहरण देने के लिए एवं पथ प्रदर्शन के लिए दिए जा रहे हैं | किसी भी भाषा के उत्तर को केवल एक ही शब्दावली अथवा ढंग में बांधने से भाषा का स्वाभाविक विकास एवं नवाचार, प्रयोग आदि बाधित हो जाता है |अतः विद्यार्थी ध्यान रखेंगे कि वे प्रदत्त उत्तरों को केवल मार्गदर्शक समझकर इसके समान उत्तर लिखने का प्रयास करेंगे| केवल इन्हीं उत्तरों को यथावत् नक़ल करने की चेष्टा नहीं करेंगे|

खण्ड - क (20 अंक)

1	(क) जीवन कथा लिखने के लिए।	2
	(ख) संकोच वश एवं तत्व की कमी महसूस करने के कारण ।	2
	(ग) सेक्रेटरी बनाकर, संस्कृत सीखाने, छापा खाना खोलकर	2
	(घ) इससे अकर्मण्यता बढती है।	2
	(ङ) परिश्राम से सफलता ।	2
	(च) अपने मित्रों से	2
	(छ) अनुवाद कार्य	2
	(ज) परिश्रम से सफलता (अन्य मिलते जुलते भी स्वीकार्य)	1
2.	(क) पक्षियों का जाना, चींटे-चींटियों का बिल छोड जाना ।	1
	(ख) समस्या से डर कर पलायन	1
	(ग) दूब में जीवित रहने की क्षमता।	1
	(घ) जीवन और जीवटता के लिए।	1
	(ङ) दूब बची होने पर ।	1

खण्ड – ख (25 अंक)

3. निबंध लेखन 5

(प्रस्तावना – 1 अंक, विषय वस्तु -2 अंक, निष्कर्ष एवं भाषा-कौशल - 2 अंक)

- कोई भी प्रभावोत्पादक सूक्ति उद्धरण आदि/
- प्रस्तावना-
  किसी भी प्रसंग के साथ विषय की भूमिका को रखते हुए विषय पर ध्यान केन्द्रित करना अर्थात् संक्षेप में विषय के महत्व के सम्बन्ध में बताते हुए क्यों और कैसे की जिज्ञासा पैदा करना|
- विषय का अभिप्राय स्पष्ट करना और आवश्यकता के अनुसार उसकी उपयोगिता अथवा दुष्परिणाम की चर्चा करना|
- आवश्यकता के अनुसार विषय के महत्त्व /योगदान/आवश्यता आदि पर उद्धरण/ उदाहरण देते हुए विषय का समुचित विस्तार करना|
- विषय की मांग के अनुसार बुराई को रोकने और अच्छाई को बढ़ाने/ फैलाने के लिए उठाए जाने वाले कदमो/उपायों का क्रमशः उल्लेख करना|
- उपसंहार-

- विषय की मांग के अनुसार विषय-वस्तु को समेटते हुए अंतिम निर्णय प्रस्तुत करते हुए इस बात पर बल देना कि हमें क्या करना चाहिए और कैसे करना चाहिए |
- अंत में यदि संभव हो तो कोई भी प्रभावोत्पादक सूक्ति/उद्धरण आदि

4. पत्र लेखन 5

[औपचारिकता (प्रारूप) विषय वस्तु - 2 भाषा कौशल - 1]

परीक्षाभवन-,
अ .स .ब .
दिनांक-------- :

मानार्थ सेवा में/

पद का नाम,
कार्यालय विभाग नाम /
स्थल स्थान/

विषय : - सारगर्भित और संक्षेप में अपनी विषयवस्तु को स्पष्ट करते हुए

महोदय/मान्यवर,

- अपना संक्षिप्त परिचय देते हुए अपनी बात/ समस्या आदि को सरल और स्पष्ट शब्दों में प्रकट करना
- अपनी बात/समस्या के सन्दर्भ में आवश्यक निदान /उपाय/विकल्पों का सुझाव देना|
- धन्यवाद/कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए पत्र का समापन करना

भवदीय
क ख ग

5. (1) समाचार प्रकाशन के लिए प्रस्तुत करने का निश्चित समय । 1

(2) जनता तक संदेश, जागरुक करना । 1

(3) सरकारी कामकाज पर गहरी नजर रखना । 1

(4) समाचार की समझ अंत में, यह तीन भागों में होती है। 1

(5) किसी विषय पर गंभीर चिंतन एवं समस्या उन्मूलन । 1

6. आलेख लेखन / समीक्षा लेखन 5

(विषय वस्तु – 4, भाषा कौशल – 1)

आलेख

किसी विषय को सरल शब्दों में स्पष्ट/परिभाषित करते हुए प्रदत्त विषय पर सर्वांगपूर्ण (सभी अंगो/क्षेत्रों की) जानकारी देना जो तथ्यात्मक हो ,विश्लेषणात्मक हो और विचारात्मक हो| इसमें विचारों और तथ्यों की स्पष्टता रहनी आवश्यक है ,ये विचार क्रमबद्ध रूप में भी अवश्य होने चाहिए| आलेख की शैली विवेचन, विश्लेषण अथवा विचार-प्रधान हो सकती है| आलेख गंभीर अध्ययन पर आधारित प्रामाणिक रचना होती है|

अथवा

समीक्षा–

- पुस्तक का नाम - ----------
- लेखक का नाम - ----------
- प्रकाशक का नाम ----------
- प्रकाशन का वर्ष ----------
- अंकित मूल्य ----------
- उपलब्धि स्थान ----------

- समीक्षा-

इसके अंतर्गत पुस्तक में वर्णित मुख्य विषयवस्तु (प्रतिपाद्य) बताया जाए और यथासंभव पुस्तक में निहित सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, चारित्रिक और व्यवहारिक पक्ष को भी उजागर किया जाए|

पुस्तक में वर्णित कुछ अच्छे प्रसंगों/ उद्धरणों का उल्लेख करते हुए उसका महत्व और उसकी उपयोगिता को भी स्पष्ट किया जाए |

7 फीचर लेखन 5

फ़ीचर का उद्देश्य मुख्य रूप से पाठकों को

1. सूचना देना, 2. शिक्षित करना तथा 3. मनोरंजन करना होता है।

समकालीन घटना तथा किसी भी क्षेत्र विशेष की विशिष्ट जानकारी के सचित्र तथा मोहक विवरण को फीचर कहते हैं| फीचर मनोरंजक ढंग से तथ्यों को प्रस्तुत करने की कला है | वस्तुत: फीचर मनोरंजन की उंगली थाम कर जानकारी परोसता है| इस प्रकार मानवीय रूचि के विषयों के साथ सीमित समाचार जब चटपटा लेख बन जाता है तो वह फीचर कहा जाता है | अर्थात- "ज्ञान + मनोरंजन = फीचर" |

फीचर में अतीत, वर्तमान और भविष्य की प्रेरणा होती है | फीचर लेखक पाठक को वर्तमान दशा से जोड़ता है, अतीत में ले जाता है और भविष्य के सपने भी बुनता है | फीचर लेखन की शैली विशिष्ट होती है | शैली की यह भिन्नता ही फीचर को समाचार, आलेख या रिपोर्ट से अलग श्रेणी में ला कर खडा करती है |

फीचर लेखन को अधिक स्पष्ट रूप से समझने के लिए निम्न बातों का ध्यान रखें –

१. समाचार साधारण जनभाषा में प्रस्तुत होता है और फीचर एक विशेष वर्ग व विचारधारा पर केंद्रित रहते हुए विशिष्ट शैली में लिखा जाता है |

२. एक समाचार हर एक पत्र में एक ही स्वरुप में रहता है परन्तु एक ही विषय पर फीचर अलग-अलग पत्रों में अलग-अलग प्रस्तुति लिये होते हैं | फीचर के साथ लेखक का नाम रहता है |

३. फीचर में अतिरिक्त साज-सज्जा, तथ्यों और कल्पना का रोचक मिश्रण रहता है |

४. घटना के परिवेश, विविध प्रतिक्रियाएँ व उनके दूरगामी परिणाम भी फीचर में रहा करते हैं |

५. उद्देश्य की दृष्टि से फीचर तथ्यों की खोज के साथ मार्गदर्शन और मनोरंजन की दुनिया भी प्रस्तुत करता है|

६.फीचर फोटो/ चित्र प्रस्तुति से अधिक प्रभावशाली बन जाता है | फ़ीचर में लेखक को अपनी राय, दृष्टिकोण और भावनाओं को जाहिर करने का अवसर होता है।

खण्ड – ग (55 अंक)

8. कोई एक पद्यांश के उत्तर अपेक्षित है। 2x4=8

(1) नीले शंख, लीपे हुए चौके के समान।

(2) दोनों एक रंग के समान लगते हैं (स्लेटी)।

(3) पूर्व दिशा से सूरज के निकलने के समय जैसा समय की तुलना।

(4) धीरे-धीरे ब्रह्माण्ड का साक्षात्कार होना।

अथवा

(1) कागज के टुकडे का

(2) कागज पर कविता के भाव।

(3) भावों से काव्य।

(4) भावों की आंधी से।

9. कोई एक पद्यांश के उत्तर अपेक्षित हैं। 2x3=6

(1). भाषा में कल्पना शक्ति, भाव साम्यता और सरलता।

(2). बच्चों की मस्ती और उल्लास का भाव।

(3). बच्चों की कोमलता, निडरता, उमंग और उल्लास।

अथवा

(1). प्रतीकात्मकता, सरलता, भावात्मक।

(2) झरणे से भावों के उदगम की तुलना।

(3) बिम्ब रूप में झरणो का उद्गम, प्रिय का मुख चाँद।

10. किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं। 2x3=6

(क) मीडिया की संवेदनहीनता पर अटैक, स्वार्थीपन।

(ख) सरल रूप में सामर्थ्यवान भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

(ग) स्लेटी रंग के आसमान पर चौके चुल्हे का राखा से लीपा होने की तुलना

11. कोई एक गद्यांश के उत्तर अपेक्षित हैं। 2x4=8

(क) चितेदार जली भूनी सी, ज्यादा सेंकने के कारण।

(ख) वह अपनी पाक् कला की बडाई की अभिलाषा में थी।

(ग) मोटी, जली और ज्यादा सेंक वाली रोटी पाकर।

(घ) लेखिका के रूआंसे और क्या बनाया है के सवाल पर ?

अथवा

(क) भाषा का बिना प्रयोग के।

(ख) सभी इसके भावों और अदाकारी से समझ पैदा करते हैं, रस लेते हैं।

(ग) भाषाहीन होने पर भी अर्थवान बनी हुई है। सहज कलाकारी।

(घ) सभी को समान रूप से स्वीकार्य्।

12. किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं। 4x3=12

(क) आवश्यक्ताओं और बाजारवाद, बचत और इच्छाओं पर नियंत्रण के लिए।

(ख) काम की आजादी, सामाजिक स्तर पर भेद-भाव, मानवीय आधार पर गिरावट।

(ग) लुट्ट्न का ढोल पर पूर्ण विश्वास, ढोल की आवाज को गुरु मंत्र मानना।

(घ) राजनीतिक बंटवारे से मन नहीं बंट सकते, विश्व के कई देशों के एक होने का प्रमाण्।

(ड) शिरीष का फूल सर्दी-गर्मी, धूप-छांव दुख-सुख में निडरता से खडा रहता है।

13 पाठ के आधार पर प्रश्न की मांग के अनुसार अपने आप उत्तर का मूल्यांकन करें। 5x3=15

14

(क) श्री सौंदलगेकर कथा नायक के पाँचवीं कक्षा के मास्टर थे। वे कविता के अध्यापन के साथ साथ कविता गाया भी करते थे। जब वे कक्षा में कोई कविता पढाया करते थे तो उसे हाव भाव के साथ गाया भी करते थे, अर्थ सहित व्याख्यान करते और अन्य कवियों की कविताओं के साथ तुलना भी करते थे। मास्टर साहब कवियों के संस्मरण भी सुनाते। लेखक मास्टर सौंदलगेकर साहब की इस विशेषता से इतने प्रभावित हुए कि स्वयं कविता करते और घर, खेत में काम करते हुए कविता गुनगुनाते। जब लेखक कोई नई कविता बनाते तो अगले दिन मास्टर जी को अवश्य सुनाते। सुनाते। मास्टर जी उसकी प्रशंसा करते और छंद, अलंकार, भाषा,शब्द आदि का विवेचन करते इससे लेखक को कविता लेखन की प्रेरणा मिलती।

(ख) सिन्धु सभ्यता में औजार तो बहुत मिलेहैं,परंतु हथियारों का भी प्रयोग होता रहा होगा , इसका कोई प्रमाण नहीं है। वे लोग अनुशासनप्रिय थे परन्तु यह अनुशासन किसी ताकत के बल के द्वारा कायम नहीं किया गया,बल्कि लोग अपने मन और कर्म से ही अनुशासन प्रिय थे। मुअनजो-दड़ो की खुदाई में एक दाढ़ी वाले नरेश की छोटी मूर्ति मिली है परन्तु यह मूर्ति किसी राजतंत्र या धर्मतंत्र का प्रमाण नहीं कही जा सकती। विश्व की अन्य सभ्यताओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन से भी यही अनुमान लगाया जा सकता है कि सिन्धु सभ्यता की खूबी उसका सौन्दर्यबोध है जो कि समाज पोषित है, राजपोषित या धर्मपोषित नहीं है।

पूर्व परिषदीय परीक्षा 2016-17 (दूसरा)

कक्षा : बारहवीं

विषय : हिन्दी (केन्द्रिक)

आदर्श उत्तर-माला

पूर्णांक :100 समय: 3 घण्टे

<u>विद्यार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश-</u>

इस उत्तर-माला में बताए गए उत्तर अथवा समाधान केवल उदाहरण देने के लिए एवं पथ प्रदर्शन के लिए दिए जा रहे हैं | किसी भी भाषा के उत्तर को केवल एक ही शब्दावली अथवा ढंग में बांधने से भाषा का स्वाभाविक विकास एवं नवाचार, प्रयोग आदि बाधित हो जाता है |अतः विद्यार्थी ध्यान रखेंगे कि वे प्रदत्त उत्तरों को केवल मार्गदर्शक समझकर इसके समान उत्तर लिखने का प्रयास करेंगे| केवल इन्हीं उत्तरों को यथावत् नक़ल करने की चेष्टा नहीं करेंगे|

खण्ड – क (20 अंक)

1

(क) मातृ भाषा और समाज (अन्य भी विचारणीय)। 1

(ख) मातृ भाषा मनन और चिंतन की भाषा। 2

(ग) समाज को समझने हेतु । 2

(घ) समाज की प्रत्येक परंपरा और नियमों को जानने हेतु। 2

(ङ) समाज की। 2

(च) समाज के लोग अपनी मातृ भाषा में कामकाज करना भूल जायेंगे। 2

(छ) मातृ भाषा ज्यादा समझ में आ सकती है। 2

(ज) 'ता" और 'मूल' 2

2.

(क) पुष्प की अभिलाषा (अन्यों पर भी विचार)। 1

(ख) जिस पथ पर वीर लोग जाते हैं 1

(ग) शूरवीर, शहीदों का 1

(घ) सुरबाला के केशों में बिंधना, सम्राटों के मुकुट पर सजना, देवालय में चढना । 1

(ङ) हमें वीरता पर न्योछावर होना चाहिए। 1

खण्ड – ख (25 अंक)

3. निबंध लेखन 5

(प्रस्तावना – 1 अंक, विषय वस्तु -2 अंक, निष्कर्ष एवं भाषा-कौशल - 2 अंक)

- कोई भी प्रभावोत्पादक सूक्ति उद्धरण आदि/
- प्रस्तावना-
  किसी भी प्रसंग के साथ विषय की भूमिका को रखते हुए विषय पर ध्यान केन्द्रित करना अर्थात् संक्षेप में विषय के महत्व के सम्बन्ध में बताते हुए क्यों और कैसे की जिज्ञासा पैदा करना|
- विषय का अभिप्राय स्पष्ट करना और आवश्यकता के अनुसार उसकी उपयोगिता अथवा दुष्परिणाम की चर्चा करना|
- आवश्यकता के अनुसार विषय के महत्त्व /योगदान/आवश्यता आदि पर उद्धरण/ उदाहरण देते हुए विषय का समुचित विस्तार करना|

- विषय की मांग के अनुसार बुराई को रोकने और अच्छाई को बढ़ाने/ फैलाने के लिए उठाए जाने वाले कदमो/उपायों का क्रमशः उल्लेख करना|
- उपसंहार-
- विषय की मांग के अनुसार विषय-वस्तु को समेटते हुए अंतिम निर्णय प्रस्तुत करते हुए इस बात पर बल देना कि हमें क्या करना चाहिए और कैसे करना चाहिए |
- अंत में यदि संभव हो तो कोई भी प्रभावोत्पादक सूक्ति/उद्धरण आदि

4. पत्र लेखन 5

[औपचारिकता (प्रारूप) विषय वस्तु - 2 भाषा कौशल - 1]

परीक्षा-भवन,

अ. ब. स.

दिनांक: --------

मानार्थ/सेवा में

पद का नाम,

कार्यालय/ विभाग नाम

स्थल/स्थान

विषय : सारगर्भित और संक्षेप में अपनी विषयवस्तु को स्पष्ट करते हुए -

महोदय/मान्यवर,

- अपना संक्षिप्त परिचय देते हुए अपनी बात/ समस्या आदि को सरल और स्पष्ट शब्दों में प्रकट करना
- अपनी बात/समस्या के सन्दर्भ में आवश्यक निदान /उपाय/विकल्पों का सुझाव देना|
- धन्यवाद/कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए पत्र का समापन करना

भवदीय

क ख ग

5. (1) समाचार प्रकाशन के लिए प्रस्तुत करने का निश्चित समय। 1

(2) जनता तक संदेश, जागरुक करना। 1

(3) सरकारी कामकाज पर गहरी नजर रखना। 1

(4) समाचार की समझ अंत में, यह तीन भागों में होती है। 1

(5) किसी विषय पर गंभीर चिंतन एवं समस्या उन्मूलन। 1

6. आलेख लेखन / समीक्षा लेखन 5

(विषय वस्तु – 4, भाषा कौशल – 1)

आलेख

किसी विषय को सरल शब्दों में स्पष्ट/परिभाषित करते हुए प्रदत्त विषय पर सर्वांगपूर्ण (सभी अंगो/क्षेत्रों की) जानकारी देना जो तथ्यात्मक हो ,विश्लेषणात्मक हो और विचारात्मक हो| इसमें विचारों और तथ्यों की स्पष्टता रहनी आवश्यक है ,ये विचार क्रमबद्ध रूप में भी अवश्य होने चाहिए| आलेख की शैली विवेचन, विश्लेषण अथवा विचार-प्रधान हो सकती है| आलेख गंभीर अध्ययन पर आधारित प्रामाणिक रचना होती है|

अथवा

समीक्षा–

- पुस्तक का नाम - ----------
- लेखक का नाम - ----------
- प्रकाशक का नाम ----------
- प्रकाशन का वर्ष ----------
- अंकित मूल्य ----------
- उपलब्धि स्थान ----------

समीक्षा-

इसके अंतर्गत पुस्तक में वर्णित मुख्य विषयवस्तु (प्रतिपाद्य) बताया जाए और यथासंभव पुस्तक में निहित सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, चारित्रिक और व्यवहारिक पक्ष को भी उजागर किया जाए|

पुस्तक में वर्णित कुछ अच्छे प्रसंगों/ उद्धरणों का उल्लेख करते हुए उसका महत्व और उसकी उपयोगिता को भी स्पष्ट किया जाए |

7 फीचर लेखन 5

फ़ीचर का उद्देश्य मुख्य रूप से पाठकों को

1.सूचना देना, 2. शिक्षित करना तथा 3. मनोरंजन करना होता है।

समकालीन घटना तथा किसी भी क्षेत्र विशेष की विशिष्ट जानकारी के सचित्र तथा मोहक विवरण को फीचर कहते हैं |फीचर मनोरंजक ढंग से तथ्यों को प्रस्तुत करने की कला है | वस्तुत: फीचर मनोरंजन की उंगली थाम कर जानकारी परोसता है| इस प्रकार मानवीय रूचि के विषयों के साथ सीमित समाचार जब चटपटा लेख बन जाता है तो वह फीचर कहा जाता है | अर्थात- "ज्ञान + मनोरंजन = फीचर" |

फीचर में अतीत, वर्तमान और भविष्य की प्रेरणा होती है | फीचर लेखक पाठक को वर्तमान दशा से जोड़ता है, अतीत में ले जाता है और भविष्य के सपने भी बुनता है | फीचर लेखन की शैली विशिष्ट होती है | शैली की यह भिन्नता ही फीचर को समाचार आलेख या रिपोर्ट से अलग श्रेणी में ला कर खडा करती है |

फीचर लेखन को अधिक स्पष्ट रूप से समझने के लिए निम्न बातों का ध्यान रखें –

1 समाचार साधारण जनभाषा में प्रस्तुत होता है और फीचर एक विशेष वर्ग व विचारधारा पर केंद्रित रहते हुए विशिष्ट शैली में लिखा जाता है |

2 एक समाचार हर एक पत्र में एक ही स्वरुप में रहता है परन्तु एक ही विषय पर फीचर अलग-अलग पत्रों में अलग-अलग प्रस्तुति लिये होते हैं | फीचर के साथ लेखक का नाम रहता है |

3. फीचर में अतिरिक्त साज-सज्जा, तथ्यों और कल्पना का रोचक मिश्रण रहता है |

4. घटना के परिवेश, विविध प्रतिक्रियाएँ व उनके दूरगामी परिणाम भी फीचर में रहा करते हैं |

5. उद्देश्य की दृष्टि से फीचर तथ्यों की खोज के साथ मार्गदर्शन और मनोरंजन की दुनिया भी प्रस्तुत करता है|

6. फीचर फोटो/ चित्र प्रस्तुति से अधिक प्रभावशाली बन जाता है | फ़ीचर में लेखक को अपनी राय, दृष्टिकोण और भावनाओं को जाहिर करने का अवसर होता है ।

खण्ड – ग (55 अंक)

8. कोई एक पद्यांश के उत्तर अपेक्षित है । 2x4=8

(क) कवि के मनोभावों से ।

(ख) अपूर्ण होने के कारण ।

(ग) मग्न रहने के कारण।

(घ) संसार के सुख दुख में आन्नंद में रहना।

अथवा

(1) किसान, किसबी, मजदूर, बनिया, नौकर, नट, आदि।

(2) गरीबी रूपी रावण ।

(3) राम का नाम ही सब समस्याओं का निवारण है।

(4) संसार की समस्त समस्याओं को देखकर, दुखों के कारण।

9. कोई एक पद्यांश के उत्तर अपेक्षित हैं । 2x3=6

(1). भाषा में कल्पना शक्ति, भाव साम्यता और सरलता ।

(2). झरणे से भावों के उदगम की तुलना है।

(3). प्रश्न अलंकार, पुनरुक्ति, रूपक, प्रतीक, उपमा ।

अथवा

(1). अनुप्रास, रूपक, प्रतीक, छंद मुक्त । ।

(2) सरल, सहज, प्रतीकात्मक्।

(3) बादल को क्रांति का आहवान किया गया है। संसार में दुखों का साम्राज्य स्थाई ।

10. किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं । 2x3=6

(क) मीडिया की संवेदनहीनता पर अटैक, स्वार्थीपन ।

(ख) निकलता हुआ सूर्य स्लेट पर लाल खडिया मल दी हो, जादू टूट रहा है, तारे झिलमिला रहे हैं।

(ग) कागज खेत का प्रतीक, भाव बीज का प्रतीक, कल्पना रसायन आदि।

11. कोई एक गद्यांश के उत्तर अपेक्षित हैं । 2x4=8

(क) समय का अभाव, समानता का व्यवहार नहीं।

(ख) योग्यता, जाति, धर्म, रंग नस्ल, लिंग के आधार पर कोई भेदभाव नहीं ।

(ग) भेदभाव बिना ।

(घ) इससे समाज में भेदभाव बढता है ?

अथवा

(क) संन्यासी को, सुख-दुख, धूप-छाँव, ऊंच-नीच आदि से बेपरवाह।

(ख) वायुमंडल से रस खींचता है।

(ग) भयंकर लू में लहकते रहना ।

(घ) फक्कड और अलमस्त।

12. किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं । 4x3=12

(क) अभावों में कला को निखारना ।

(ख) जाति के आधार पर काम बांटना ।

(ग) लुट्ट्न का ढोल पर पूर्ण विश्वास, ढोल की आवाज को गुरु मंत्र मानना।

(घ) दिल से सीमाओं का न मानना, भाषा, रहन सहन और संस्कृति की समानता ।

(ड) दान देने से ही वापिस मिलता है।

13. पाठ के आधार पर प्रश्न की मांग के अनुसार अपने आप उत्तर का मूल्यांकन करें। 5

14 (क) पढ़ने की लालसा- आनंदा पिता के साथ खेती का काम सँभालता था| लेकिन पढ़ने की तीव्र इच्छा ने उसे जीवन का एक उद्देश्य दे दिया और वह अपने भविष्य को एक सही दिशा देने में सफल होता है|

(ख) वचनबद्धता- आनंदा ने विद्यालय जाने के लिए पिता की जो शर्तें मानी थी उनका पालन हमेशा किया| वह विद्यालय जाने से पहले बस्ता लेकर खेतों में पानी देता| वह ढोर चराने भी जाता| पिता की बातों का अनुपालन करता|

(ग) आत्मविश्वासी एवं कर्मठ बालक–आनंदा के जीवन में अभाव ही थे| उसके पिता ने ही उसका पाठशाला जाना बंद करवा दिया था| किंतु उसने हिम्मत नहीं हारी, पूरे आत्मविश्वास के साथ योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ा और सफल हुआ|

(घ)कविता के प्रति झुकाव- आनंदा ने मास्टर सौंदलगेकर से प्रभावित होकर काव्य में रुचि लेनी प्रारम्भ की| वह खेतों में पानी देता, भैंस चराते समय भी कविताओं में खोया रहता था| धीरे-धीरे वह स्वयं तुकबंदी करने लगा| कविताएँ लिखने से उसमें आत्मविश्वास बढ़ा|

14 (ख) यशोधर बाबू और उनके बच्चों की सोच में पीढ़ीजन्य अंतराल आ गया है। यशोधर संस्कारों से जुड़ना चाहते हैं और संयुक्त परिवार की संवेदनाओं को अनुभव करते हैं जबकि उनके बच्चे अपने आप में जीना चाहते हैं। अतः जरूरत इस बात की है कि यशोधर बाबू को अपने बच्चों की सकारात्मक नई सोच का स्वागत करना चाहिए,परन्तु यह भी अनिवार्य है कि आधुनिक पीढ़ी के युवा भी वर्तमान बेतुके संस्कार और जीवन मूल्यों के प्रति आकर्षित न हों तथा पुरानी पीढ़ी की अच्छाइयों को ग्रहण करें। यह शुरूआत दोनों तरफ से होनी चाहिए ताकि एक नए एवं संस्कारी समाज की स्थापना की जा सके। 5+5=10